पत्रिका
दीप
महोत्सव

शुभ दीपावली

दीपावली का नाम मिट्टी के दीयों (दीपों) की पंक्ति (अवली) से लिया गया है। यह उत्सव नवीनीकरण और आध्यात्मिक ज्ञान की भावना को बढ़ाता है। सबसे पहले धनतेरस मनाई जाती है। इस दिन भगवान विष्णु के धन्वंतरि अवतार के साथ ही कुबेर देवता की पूजा की जाती है। उसके बाद रूपचौदस मनाते हैं। इस दिन सूर्योदय से पहले तिल के तेल से मालिश और फिर स्नान करके भगवान श्रीकृष्ण तथा शाम को यम की पूजा का विधान है। कार्तिक अमावस्या के दिन दीपावली मनाई जाती है। कहा जाता है कि इसी दिन भगवान विष्णु के सातवें अवतार भगवान श्रीराम, लंका पर विजय प्राप्त करने के बाद अयोध्या वापस आए थे। इस अवसर पर अयोध्यावासियों ने रंगोलियां बनाकर व दीये जलाकर उनका स्वागत किया था।

आतिशबाजी से करते हैं खुशी जाहिर

दीपावली के दिन देवी लक्ष्मी व गणेश जी की पूजा के बाद आतिशबाजी से खुशी जाहिर की जाती है। अगला दिन अन्नकूट के रूप में मनाया जाता है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को अपने बाएं हाथ की कनिष्ठा अंगुली पर उठाकर ब्रजवासियों की इंद्र के प्रकोप से रक्षा की थी। इसलिए इस दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। इसके बाद अगले दिन भाई दूज मनाया जाता है। इस दिन बहन, भाई को तिलक लगाती है और फिर दोनों साथ में भोजन करते हैं। इस ई-बुक के जरिए आप जानेंगे हर दिन को मनाने के पीछे की पौराणिक कथाओं, मान्यताओं और प्रथाओं के बारे में। साथ ही जानेंगे विधि-विधान से पूजा करने का तरीका...

धनतेरस, जिसे 'धन त्रयोदशी' भी कहा जाता है। कार्तिक मास कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को मनाए जाने वाले इस पर्व के पीछे कई सांस्कृतिक एवं धार्मिक मान्यताएं जुड़ी हुई हैं। इस दिन प्रदोष काल में दीपदान करने से अपमृत्यु का नाश होता है। पुराणों के अनुसार इस दिन समुद्र-मंथन के दौरान भगवान विष्णु के अंशावतार आयुर्वेद के प्रवर्तक भगवान धन्वंतरि अमृत कलश लिए प्रकट हुए थे। इसलिए धनतेरस पर उनका जन्मोत्सव भी मनाया जाता है। साथ ही आज ही के दिन काली मां का जन्मदिन भी मनाते हैं।

जैन आगम में कहते हैं ‘धन्य तेरस’ या ‘ध्यान तेरस’

जैन आगम धनतेरस को ‘धन्य तेरस’ या ‘ध्यान तेरस’ भी कहते हैं। भगवान महावीर इस दिन तीसरे और चौथे ध्यान में जाने के लिए योग निरोध के लिए चले गए थे। तीन दिन के ध्यान के बाद योग निरोध करते हुए दीपावली के दिन निर्वाण को प्राप्त हुए। एक मान्यता यह भी है कि भगवान धन्वंतरि ने काशीराज धन्व के पुत्र के रूप में जन्म लिया था, इसलिए धन्वंतरि कहलाए। विष्णु और ब्रह्म पुराण में इसका जिक्र भी है।

आयुर्वेद के जनक

विष्णु भगवान के 24 अवतारों में से 12वें अवतार माने जाते हैं धन्वंतरि। इन्हीं के साथ ही आयुर्वेद का भी धरती पर अवतरण हुआ था। इसलिए इस दिन को राष्ट्रीय आयुर्वेद दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। चार भुजाधारी धन्वंतरि जी के एक हाथ में आयुर्वेद ग्रंथ, दूसरे में औषधि कलश, तीसरे में जड़ी बूटी और चौथे में शंख विद्यमान है।

इन्होंने औषधियों के अच्छे-बुरे प्रभाव आयुर्वेद के मूल ग्रंथ 'धन्वंतरि संहिता' में बताए हैं। महर्षि विश्वामित्र के पुत्र सुश्रुत ने इन्हीं से आयुर्वेदिक चिकित्सा की शिक्षा प्राप्त कर 'सुश्रुत संहिता' की रचना की। आचार्य सुश्रुत को शल्य चिकित्सा (Surgery) का पितामह कहा जाता है। इनका जन्म छठी शताब्दी ईसा पूर्व काशी में हुआ था।

पौराणिक प्रथाएं

पीतल धातु खरीदने की परम्परा

भगवान धन्वंतरि अमृत से भरा कलश लेकर प्रकट हुए थे। इनकी प्रिय धातु पीतल को माने जाने की वजह से धनतेरस पर पीतल के बर्तन खरीदने की परंपरा हिंदू धर्म में रही है। इसके अलावा, इस अवसर पर धनिया के बीज, कौड़ी, झाड़ू तथा कुबेर एवं महालक्ष्मी यंत्र के साथ ही सोने-चांदी की खरीदारी भी शुभ मानी जाती है। किसान इस दिन नए उपकरण या बीज खरीदते हैं। धनतेरस की शाम घर से बाहर दक्षिण दिशा की ओर दीप जलाकर रखने की प्रथा भी है। इस दिन जरूरतमंदों को भोजन, वस्त्र या धन का दान करने की परम्परा है, इसके पीछे एक लोककथा है...

दक्षिण दिशा की ओर दीपदान

किसी समय में हेम नाम के एक राजा को पुत्र की प्राप्ति हुई। ज्योतिषियों ने जब बालक की कुण्डली बनाई तो पता चला कि वह विवाह के ठीक चार दिन बाद मृत्यु को प्राप्त होगा। इससे राजा ने दुखी होकर राजकुमार को ऐसी जगह भेज दिया, जहां स्त्री की परछाई भी न पड़े। दैवयोग से एक राजकुमारी उधर से गुजरी तो दोनों एक- दूसरे को देखकर मोहित हो गए और गन्धर्व विवाह कर लिया। विधि का विधान सामने आया, चार दिन बाद यमदूत उस राजकुमार के प्राण लेने आ पहुंचे। नवविवाहिता पत्नी का विलाप सुनकर यमदूत ने यम देवता से विनती की। देवता बोले, कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी की रात जो प्राणी मेरे नाम से पूजन करके दक्षिण दिशा की ओर दीपदान करेगा, उसकी अकाल मृत्यु नहीं होगी।

300 साल पुराने मंदिर में सिर्फ धनतेरस को खुलते हैं पट

सैकड़ों वर्ष पुराना विग्रह

काशी के प्रसिद्ध राजवैद्य रहे स्व. पंडित शिव कुमार शास्त्री के सुड़िया स्थित धंवन्तरि भवन में भगवान धंवन्तरि की 300 साल से भी अधिक पुरानी अष्टधातु की मूर्ति स्थापित है। रजत सिंहासन पर विराजमान यह लगभग ढाई फुट ऊंची प्रतिमा है। धनतेरस पर इनकी खास विधि से पूजा-अर्चना और श्रृंगार किया जाता है। साल में सिर्फ एक दिन धनतेरस पर आमजन के लिए इस मंदिर के पट खुलते हैं। ऐसी मान्यता है कि इस दिन भगवान धंवन्तरि के दर्शन मात्र से वर्षभर निरोग एवं व्याधिमुक्त रह सकते हैं।

काशी में है धन्वंतरि कूप

धार्मिक ग्रंथों की मानें तो, पृथ्वीलोक पर आयुर्वेद की उत्पत्ति काशी से मानी जाती है। यहां परंपरागत रूप से सुनाई जाने वाली दंतकथाओं के अनुसार महाभारत काल में राजा परीक्षित को विधान के अनुसार डसने जा रहे नागराज तक्षक और 'संजीवनी' के दम पर राजा परीक्षित को बचाने जा रहे आयुर्वेदाचार्य भगवान धन्वंतरि की भेंट काशी के मध्यमेश्वर क्षेत्र स्थित विख्यात महामृत्युंजयेश्वर मंदिर के तीसरे खंड परिसर में प्राचीन कूप के पास हुई थी। मान्यताओं के अनुसार दोनों ने यहीं अपने-अपने प्रभाव का परीक्षण किया था। विष दंश से हरे भरे पेड़ को खत्म कर देने वाला तक्षक यह देखकर दंग रह गया कि धन्वंतरि ने अपनी चमत्कारी औषधि से उसे पुनः हरा-भरा कर दिया। ऐसे में विधि का विधान कहीं डिगने न पाए, इस संशयवश तक्षक ने छलपूर्वक धन्वंतरि को पीठ पर डस लिया ताकि वह औषधि का लेप वहां पर न कर सकें। ऐसे में धन्वंतरि ने औषधियों की मंजूषा इसी कूप में ही डाली थी, जिसे आज धन्वंतरि कूप कहा जाता है।

इस वर्ष 29 अक्टूबर 2024

मंगलवार को यह पर्व मनाया जाएगा।
इसी दिन प्रदोष का व्रत भी होगा।

प्रदोष कालः सायं 5:43 से 8:16 तक

पीली मिठाई का भोग लगाएं

धनतेरस पर प्रदोष काल में पूजा का विधान है। शाम के वक्त उत्तर की ओर चौकी लगाकर उस पर स्वास्तिक बनाकर उसके ऊपर एक मिट्टी का दीपक रखें। दीपक में तिल का तेल डालें। रुई की आड़ी बत्ती लगाएं। उत्तर में मुख करके अपनी ओर देखते हुए ही दीपक को प्रज्जवलित करें। जल, रोली, चावल, मोली, पुष्प, गुड़, पताशा आदि से उस दीपक का पूजन करें। दीपक की लौ में कुबेर और धन्वंतरि भगवान का ध्यान करें। उस दीपक में एक कौड़ी और लोहे की कील अवश्य डालें। दीपक को प्रणाम करके घर के मुख्य द्वार पर रख दें। उसका मुख (बत्ती) अपने घर को देखते हुए होना चाहिए। कुबेर देवता के लिए सफेद मिठाई और धनवंतरी जी के लिए पीली मिठाई का भोग लगाएं।

धनतेरस

दीपदान के समय बोलने वाला मंत्र:

मृत्युनापाशदंडाभ्यां कालेनश्यामयासह।
त्रयोदश्यांदीपदानात् सूर्यज: प्रीयताम् इति।।

धन्वंतरि भगवान का ध्यान मंत्र:

"देवान् कृशानसुरसंनि पीडिताङ्गन्।
दृष्टवा दयालुरमृतं वितरीतुकाम:।।
पाथोधिमन्थन विधै प्रकटोभवधौ।
धन्वन्तरि: स भगवानवतार सदा न:।।

प्रार्थना

असुरों के द्वारा पीड़ित होने से दुर्बल हो रहे देवताओं को अमृत पिलाने की इच्छा से ही आप (भगवान धन्वंतरि) समुद्र मन्थन से प्रकट हुए हैं। आप हमें भी आरोग्यता का दान करें।

॥ श्री धन्वंतरि स्तोत्रं ॥

ओम शंखं चक्रं जलौकां दधदमृतघटं चारुदोर्भिश्चतुर्भिः।
सूक्ष्मस्वच्छातिहृद्यांशुक परिविलसन्मौलिमंभोजनेत्रम॥
कालाम्भोदोज्ज्वलांगं कटितटविलसच्चारूपीतांबराढ्यम।
वन्दे धन्वंतरिं तं निखिलगदवनप्रौढदावाग्निलीलम॥
ओम नमो भगवते महासुदर्शनाय वासुदेवाय धन्वंतरायेः
अमृतकलश हस्ताय सर्व भयविनाशाय सर्व रोगनिवारणाय
त्रिलोकपथाय त्रिलोकनाथाय श्री महाविष्णुस्वरूप
श्री धन्वंतरी स्वरूप श्री श्री श्री औषधचक्र नारायणाय नमः॥

॥ इति श्री धन्वंतरि स्तोत्रं ओम॥

कुबेर मंत्र:

(इसका जाप बिल्व वृक्ष के नीचे बैठकर करें)

ऊँ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन
धान्याधिपतये धन धान्य
समद्धि में देहि दापय स्वाहा।"
ऊँ श्रीं ऊँ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं
श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नम:

आरती

जय धन्वंतरि देवा, जय जय धन्वंतरि देवा।
जरा-रोग से पीड़ित, जन-जन सुख देवा।।
जय धन्वंतरि देवा, जय जय धन्वंतरि देवा।।

तुम समुद्र से निकले, अमृत कलश लिए।
देवासुर के संकट आकर दूर किए।।
जय धन्वंतरि देवा, जय जय धन्वंतरि देवा।।

आयुर्वेद बनाया, जग में फैलाया।
सदा स्वस्थ रहने का, साधन बतलाया।।
जय धन्वंतरि देवा, जय जय धन्वंतरि देवा।।

भुजा चार अति सुंदर, शंख सुधा धारी।
आयुर्वेद वनस्पति से शोभा भारी।।
जय धन्वंतरि देवा, जय जय धन्वंतरि देवा।।

तुम को जो नित ध्यावे, रोग नहीं आवे।
असाध्य रोग भी उसका, निश्चय मिट जावे।।
जय धन्वंतरि देवा, जय जय धन्वंतरि देवा।।

हाथ जोड़कर प्रभुजी, दास खड़ा मैं तेरा।
वैद्य-समाज तुम्हारे चरणों का घेरा।।
जय धन्वंतरि देवा, जय जय धन्वंतरि देवा।।

धन्वंतरिजी की आरती जो कोई जन गावे।
रोग-शोक न आए, सुख-समृद्धि पावे।।
जय धन्वंतरि देवा, जय जय धन्वंतरि देवा।।

॥ इति आरती श्री धन्वंतरि सम्पूर्णम॥

आरती का ऑडियो

मोबाइल से क्यूआर कोड स्कैन कर सुनें-

रूप चतुर्दशी

दीपावली पर्व से एक दिन पहले मनाई जाने वाली छोटी दिवाली को नरक चतुर्दशी, रूप चौदस और काली चौदस व कृष्ण चतुर्दशी भी कहा जाता है। मान्यता है कि कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी पर विधि-विधान से पूजा करने वाले लोगों को सभी पापों से मुक्ति मिल जाती है। शास्त्रों के अनुसार इस दिन सूर्योदय से पहले उठकर घर के सभी सदस्यों को अवश्य ही उबटन, पीठी करके और तिल का तेल लगाकर स्नान कर लेना चाहिए।

14 दीये जलाने की प्रथा

कहा जाता है, इस दिन व्रत रखने से भगवान श्रीकृष्ण सौंदर्य प्रदान करते हैं। इसलिए इसे रूप चौदस का नाम दिया गया है। स्नान के बाद स्वच्छ वस्त्र धारण करके घर में ही श्रीकृष्ण भगवान का यथा शक्ति या षोडशोपचार विधि से पूजन करना चाहिए। इस दिन को मां काली और हनुमान जी के जन्मदिवस के रूप में भी मनाया जाता है। साथ ही विष्णु जी के वामन रूप की भी इस दिन विशेष पूजा की जाती है। शाम को 14 दीये जलाने की प्रथा है, जिसे यमराज के लिए किया जाता है। इसे छोटी दिवाली इसलिए कहा जाता है क्योंकि दीपावली से एक दिन पहले दीये की रोशनी से रात के तिमिर को प्रकाश पुंज से दूर भगा दिया जाता है।

30 अक्टूबर 2024

बुधवार को यह पर्व मनाया जाएगा

प्रदोष कालः सायं 5:42 से 8:15 तक

दीपदान के समय मंत्रोच्चार करें

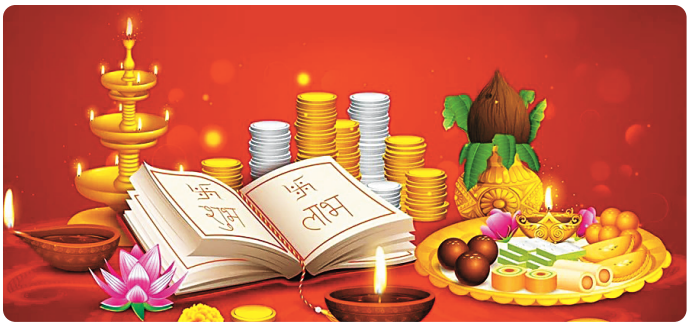

ऊँ यमाय नमः, ऊँ धर्मराजाय नमः
ऊँ मृत्यवे नमः, ऊँ अंतकाय नमः
ऊँ वैवस्वताय नमः, ऊँ कालाय नमः
ऊँ सर्वभूतक्षयाय नमः, ऊँ औदुम्बराय
नमः, ऊँ दध्नाय नमः, ऊँ नीलाय नमः
ऊँ परमेष्ठिने नमः, ऊँ वृकोदराय नमः
ऊँ चित्राय नमः, ऊँ चित्रगुप्ताय नमः

इन मंत्रों के द्वारा थाली में दीपक, मोली, चंदन, रोली, चावल, मीठे मखाने आदि रखकर पूजन करना चाहिए। एक दीपक घर के मुख्य द्वार के बाहर भी रखना चाहिए, जिससे वर्षभर जो कूड़ा हमने बाहर निकाला है वो दरिद्रा देवी भी सम्मानपूर्वक हमारे जीवन से बाहर चली जाएं और अगले दिन से लक्ष्मी माता का आगमन हो जाए।

मां काली की पूजा

काली चौदस की पूजा व व्रत माँ काली को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। काली माँ का पूजन करने से व्यक्ति के शत्रुओं का नाश हो जाता है तथा उसे किसी भी प्रकार का भय नहीं रहता। पूजा करने से पहले अभ्यंग स्नान करके इत्र लगाएं। इसके बाद लाल-पीले रंगों से रंगोली बनाएं। और फिर चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर मां काली की मूर्ति अथवा चित्र की स्थापना करें। धूप, पुष्प, काली उड़द की दाल, गंगा जल, हल्दी, हवन सामग्री, कलश, कपूर, कुमकुम, नारियल, देसी घी, चावल, सुपारी, गुड़ आदि सामग्री से पूजा करें। मां की आरती गाएं।

ब्राह्मणों को करवाएं भोजन

एक कथा के अनुसार, रन्तिदेव नामक एक पुण्यात्मा और धर्मात्मा राजा का जब अंतिम समय आया तो यमराज के दूत उन्हें नरक में ले जाने के लिए आगे बढ़े। यमदूतों को देखकर राजा आश्चर्यचकित हो गए। उन्होंने पूछा, 'मैंने तो कभी कोई अधर्म नहीं किया, तो फिर आप मुझे नरक में क्यों भेज रहे हैं।' इस पर यमदूतों ने कहा, 'एक बार तुम्हारे द्वार से एक ब्राह्मण भूखा लौट गया था, जिस कारण तुम्हें नरक जाना पड़ रहा है।' इस पर राजा ने कहा कि वह उसे एक वर्ष का समय देने की कृपा करें। राजा का कथन सुनकर यमदूत उन्हें एक वर्ष की आयु प्रदान कर चले गए। उनके जाने के बाद राजा ऋषियों के पास गया और उन्हें समस्त वृत्तांत बताया। इस पर ऋषियों ने कहा, यदि आप कार्तिक माह की कृष्ण चतुर्दशी का व्रत करें और ब्राह्मणों को भोजन करवाकर उनसे अपने अपराधों के लिए क्षमा याचना करें तो आप पापमुक्त हो सकते हैं। राजा वह सब करता है और अंत समय में वह भगवान विष्णु के वैकुण्ठ धाम को जाता है।

भगवान कृष्ण को बताया वृतांत

अन्य कथा के अनुसार, एक दिन देवराज इंद्र, भगवान कृष्ण से मिलने द्वारका आए। उन्होंने कृष्ण से कहा कि दैत्यराज भौमासुर, जिसे नरकासुर के नाम से भी जाना जाता है, के अत्याचार की वजह से देवतागण त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। उसने वरुण का छत्र, अदिती के कुंडल और देवताओं से मणि छीन ली है। उसने पृथ्वी के कई राजाओं, ऋषियों और हजारों कन्याओं का भी हरण कर बंदीगृह में डाल दिया है, कृपा करके रक्षा करें। यह सुन भगवान कृष्ण पत्नी सत्यभामा के साथ गरूड़ पर सवार होकर नरकासुर की नगरी प्रागज्योतिषपुर पहुंच कर नरकासुर से युद्ध किया। उसको शाप था कि वह स्त्री के हाथों मारा जाएगा। इसलिए कृष्ण ने सत्यभामा को सारथी बनाकर उसका अंत कर दिया और उसके पुत्र भगदत्त को प्रागज्योतिषपुर का राजा बना दिया। भगवान कृष्ण ने जिस दिन नरकासुर का वध किया था, उस दिन कार्तिक मास की कृष्ण चतुर्दशी थी। इसलिए इसे नरक चतुर्दशी के नाम से जाना जाता है। श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध करके देवताओं व ऋषियों के साथ ही सोलह हजार एक सौ कन्याओं को भी मुक्त करवाया।

भगवान वामन ने नापा राजा बलि का राज्य

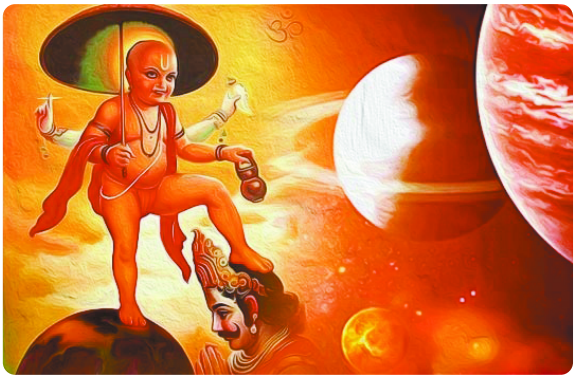

एक प्रसंग के अनुसार, जब भगवान वामन ने त्रयोदशी से अमावस्या की अवधि के बीच दैत्यराज बलि के राज्य को तीन कदमों में नाप दिया तो बलि ने अपना पूरा राज्य उन्हें दान कर दिया। इस पर भगवान वामन ने प्रसन्न होकर बलि से वर मांगने को कहा। बलि ने कहा , 'हे प्रभु ! मैं लोगों के कल्याण के लिए एक वर मांगता हूं। इन तीन दिनों में प्रतिवर्ष मेरा ही राज रहना चाहिए। इन दिनों जो लोग मेरे राज्य में दीपावली मनाएं, उनके घर में लक्ष्मी का स्थाई निवास हो। जो लोग नरक चतुर्दशी के दिन दीपों का दान करें, उनके सभी पितरों को यम यातना ना सहनी पड़े। 'यह प्रार्थना सुनकर भगवान वामन बोले- 'राजन ! मेरा वरदान है कि जो कृष्ण चतुर्दशी के दिन नरक के स्वामी यमराज को दीपदान करेंगे, उनके सभी पितर कभी भी नरक में नहीं रहेंगे और जो लोग इन तीन दिनों में उत्सव मनाएंगे, उन्हें छोड़कर मेरी प्रिय लक्ष्मी कहीं भी नहीं जाएंगी।'

मान्यताएं

घर के मुख्य द्वार पर यम के नाम का दीपक

रूप चतुर्दशी के दिन खास तौर पर यमराज की पूजा की जाती है। मान्यता है कि इस दिन घर के मुख्य द्वार पर यम के नाम का दीपक जलाया जाता है। ऐसा करने से परिवार में अकाल मृत्यु का भय दूर हो जाता है। इस दिन विधि - विधान से पूजा करने वाले को सभी तरह के पापों से और साथ ही नर्क से भी मुक्ति मिल जाती है।

घर का बड़ा जलाए पहला दीपक, पूरे घर में घुमाकर रखें बाहर

घर के सबसे बड़े सदस्य को एक दीया जलाना चाहिए। इस दीए को पूरे घर में घुमाकर घर से बाहर दूर रख आएं। घर के दूसरे सदस्य अंदर ही रहें और इस दीपक को न देखें। ऐसा माना जाता है कि इस दीये को पूरे घर में घुमाकर बाहर ले जाने से सभी बुरी शक्तियां घर से बाहर चली जाती हैं।

उबटन लगाएं

स्कंद, पद्म और भविष्य पुराण के अनुसार, इस दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठें और हल्दी, चंदन, बेसन, शहद, दूध आदि से बने उबटन को लगाएं। यदि यह न कर पाएं तो कम से कम तिल के तेल से मालिश जरूर करें। इसके बाद किसी पवित्र नदी अथवा अपने घर में नहाने के पानी में पवित्र नदी का जल डालकर स्नान करें। मान्यता है कि रूप चौदस के दिन इस उपाय को करने पर व्यक्ति का सौंदर्य सालों-साल तक रहता है।

चिरचिटा के पत्ते डाल करें स्नान

मान्यता है कि इस दिन तेल लगाकर पानी में अपामार्ग जिसे चिरचिरा, लटजीरा, चिरचिटा के नाम से भी जाना जाता है, के पत्ते डालकर स्नान करने के बाद भगवान कृष्ण के दर्शन करें। इससे सभी पापों से मुक्ति मिलती है और सुंदर रूप की प्राप्ति होती है।

सूर्योदय से पूर्व स्नान

एक एक मान्यता के अनुसार, इस दिन सूर्योदय से पूर्व तिल्ली के तेल से मालिश करनी चाहिए। इसके बाद अपामार्ग का प्रोक्षण करना चाहिए। लौकी के टुकड़े और अपामार्ग, दोनों को अपने सिर के चारों ओर सात बार घुमाएं। ऐसा करने से नरक का भय दूर होता है। साथ ही पद्मपुराण के इस मंत्र का पाठ करें:

"सितालोष्ठसमायुक्तं संकटकदलान्वितम।
हर पापमपामार्ग भ्राम्यमाणः पुनः पुनः॥"

अर्थात् 'हे तुम्बी (लौकी) हे अपामार्ग तुम बार-बार फिराए जाते हुए मेरे पापों को दूर करो और मेरी कुबुद्धि का नाश कर दो।' इसके बाद स्नान करें और लौकी और अपामार्ग को घर के दक्षिण दिशा में विसर्जित कर दें। इससे रूप बढ़ता है और शरीर स्वस्थ रहता है। आज के दिन सूर्योदय से पूर्व स्नान करने से मनुष्य नरक के भय से मुक्त हो जाता है।

तिल के तेल में लक्ष्मी जी, जल में गंगाजी

पद्मपुराण में लिखा है कि-

'जो मनुष्य सूर्योदय से पूर्व स्नान करता है, वह यमलोक नहीं जाता है अर्थात् नरक का भागी नहीं होता है।'

भविष्यपुराण के अनुसार कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी को जो व्यक्ति सूर्योदय के बाद स्नान करता है, उसके पिछले एक वर्ष के समस्त पुण्य कार्य समाप्त हो जाते हैं। इस दिन स्नान से पूर्व तिल्ली के तेल की मालिश करनी चाहिए, यद्यपि कार्तिक मास में तेल की मालिश वर्जित होती है, किन्तु नरक चतुर्दशी के दिन इसका विधान है। नरक चतुर्दशी को तिल्ली के तेल में लक्ष्मी जी तथा जल में गंगाजी का निवास होता है।

शुभ दीपावली

कार्तिक महीने की अमावस्या को दीपावली हर्षोल्लास से मनाई जाती है। इस पर्व का आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व है। यह त्योहार भारत सहित यूएस, ऑस्ट्रेलिया, नेपाल, श्रीलंका, सिंगापुर, फिजी, मॉरीशस, मलेशिया, त्रिनिदाद और टोबैगो आदि देशों में भी मनाया जाता है। माना जाता है कि देवी लक्ष्मी का जन्म क्षीर समुद्र के मंथन से इसी दिन हुआ था। इसलिए इस दिन उनके स्वागत के लिए रंगोली बनाई जाती है। साथ ही, मां लक्ष्मी के पद चिन्ह भी लगाए जाते हैं और गणेश जी के साथ देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है। कहा जाता है, इस दिन वह धरती पर आकर भक्तों को सौभाग्य का दान करती हैं।

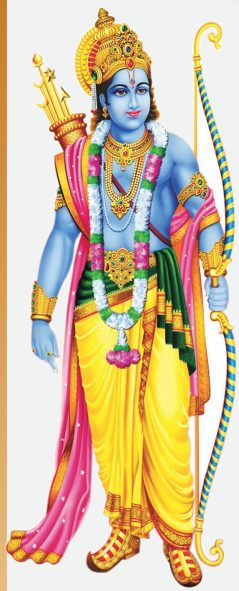

अयोध्यावासियों ने श्रीराम, सीता व लक्ष्मण के स्वागत के लिए सजाई अयोध्या

पवित्र रामायण ग्रंथ के अनुसार, दीपावली पर्व का विशेष संबंध त्रेता युग से है। इस दिन भगवान श्रीराम, पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ 14 साल का वनवास बिताकर और रावण पर विजय हासिल कर अयोध्या लौटे थे। उनके आने की खुशी में अयोध्यावासियों ने उनके स्वागत के लिए पूरी नगरी में सजावट की और जगह-जगह रंगोलियां बनाकर घी के दीये जलाए थे।

12 साल ज्ञात और एक साल अज्ञात वास काटकर इसी दिन लौटे पांडव

महाकाव्य महाभारत के अनुसार, पांडव भाइयों को जुए में शर्त हारने के लिए धोखा दिया गया था। जिसके बाद कौरवों ने उन्हें 12 साल ज्ञात और एक साल के अज्ञात वास के लिए निर्वासित कर दिया था। कई सालों तक अनगिनत कठिनाइयों का सामना करने के बाद, पांडव अपनी पत्नी द्रौपदी के साथ कार्तिक अमावस्या के दिन ही हस्तिनापुर वापस लौटे थे। इस पर प्रजा ने उनके स्वागत के लिए ढेरों दीप जलाए थे।

आचार्य जिनसेन के हरिवंश पुराण में दीपालिका या दीपों की महिमा

दीपावली, जैन धर्म के लोगों के लिए भी एक अहम त्योहार है। इसे 24वें जैन तीर्थंकर भगवान महावीर के निर्वाण या आध्यात्मिक जागृति के रूप में मनाया जाता है। जैन धर्म में, दिवाली को सबसे पहले आचार्य जिनसेन द्वारा लिखित हरिवंश पुराण में दीपालिका या दीपों की महिमा के रूप में संदर्भित किया गया था। उनके शब्दों में, तीर्थंकरों ने इस अवसर को चिह्नित करने के लिए पावनागरी को दीपों से प्रकाशित किया था।

गुरु हरगोबिंद साहिब ने पहना 52 झालरों वाला लबादा

ऐतिहासिक दस्तावेजों के अनुसार, बादशाह जहांगीर ने कई सालों की कैद के बाद, गुरु हरगोबिंद साहिब को दिवाली की तिथि के दिन ही रिहा किया था। हालांकि, गुरु ने कहा कि वह तब तक नहीं जाएंगे, जब तक उनके साथ कैद 52 अन्य राजकुमारों को भी रिहा नहीं किया जाता। इस पर बादशाह ने कहा कि निकलते समय जो लोग गुरु के लबादे को पकड़े रहेंगे, सिर्फ उन्हीं को रिहा किया जाएगा। इस पर गुरु हरगोबिंद साहिब ने 52 झालरों वाला लबादा बनवाया, ताकि हर राजकुमार एक-एक झालर पकड़कर, उनके साथ जेल से बाहर आ सके। इस आजादी का उत्सव दीप जलाकर मनाया गया था। यह परंपरा तब से आज तक चली आ रही है। इसी तिथि को वर्ष 1577 में स्वर्ण मंदिर की आधारशिला भी रखी गई थी। इसलिए सिख समुदाय भी दिवाली बहुत उत्साह से मनाता है।

दिवाली पर 40 गज ऊपर लटकाया जाता था आकाशदीप

कहा जाता है कि दीन-ए-एलाही के प्रवर्तक मुगल सम्राट अकबर के शासन में दौलत खाने के सामने 40 गज ऊंचे बांस पर एक बड़ा आकाशदीप दिवाली के दिन ही लटकाया जाता था। बादशाह जहांगीर भी दिवाली धूमधाम से मनाते थे। मुगलवंश के अंतिम सम्राट बहादुर शाह जफर भी दिवाली का त्योहार मनाते थे। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेते थे। शाह आलम द्वितीय के समय में समूचे शाही महल को दीपों से सजाया जाता था व लाल किले में आयोजित कार्यक्रमों में हिंदू-मुस्लमान दोनों भाग लेते थे।

शांत रूप 'लक्ष्मी' जी के साथ रौद्ररूप काली की पूजा का भी विधान

कहा जाता है कि जब मां दुर्गा ने दुष्ट राक्षसों का संहार करने के लिए महाकाली का रूप धारण किया और राक्षसों का संहार करने के बाद भी उनका क्रोध शांत नहीं हुआ तो ऐसे में महाविनाश को रोकने के लिए भगवान शिव, महाकाली के चरणों में लेट गए। उनके स्पर्श मात्र से ही देवी का क्रोध शांत हो गया। महाकाली के इस शांत रूप 'लक्ष्मी' जी की पूजा इस दिन विशेष रूप से की जाती है। इसी रात इनके रौद्ररूप काली की पूजा का भी विधान है।

धन की देवी लक्ष्मी के साथ ही बुद्धि के देवता गणेश की पूजा जरूरी

एक बार की बात है, एक राजा ने किसी गरीब लकड़हारे पर प्रसन्न होकर उसे चंदन की लकड़ी का पूरा जंगल दे दिया, लेकिन लकड़हारा मूर्ख और अज्ञानी था। वह चंदन का महत्व नहीं समझ पाया और भोजन पकाने में उन लकड़ियों का उपयोग करता रहा। धीरे-धीरे उसने पूरा जंगल साफ कर दिया और फिर से अपनी बदहाल अवस्था में पहुंच गया। राजा ने सोचा यह सच है कि बुद्धि होती है तभी लक्ष्मी अर्थात धन का संचय किया जा सकता है। गणपति बुद्धि के स्वामी हैं, बुद्धि-दाता हैं।

जब साधु की इच्छा हुई राजसी ठाठ भोगने की...

एक अन्य कथा के अनुसार, एक बार एक साधु के मन में राजसी सुख भोगने का विचार आया। यह सोचकर उसने लक्ष्मीजी को प्रसन्न करने के लिए घोर तपस्या की। इस पर उसे मनोवांछित वरदान मिला। इसके बाद उस साधु ने राजा के दरबार में पहुंचकर झटके से राजा का मुकुट नीचे गिरा दिया। इस पर राजा और सभासदों की भृकुटियां तन गईं। किंतु तभी मुकुट में से एक विषैला सांप निकला। यह देखकर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और सोचा कि इस साधु ने सांप से उसकी रक्षा की है, इसलिए उसे अपना मंत्री बना लिया। एक दिन साधु ने सभी को फौरन राजमहल से बाहर जाने को कहा। सभी उनके चमत्कार को नमस्कार करते थे। इसलिए राजमहल तुरंत खाली कर दिया। अगले ही पल महल धड़धड़ाता हुआ खडंहर बन गया।

यह सब देखकर साधु के मन में अहंकार उत्पन्न हो गया। एक दिन राजमहल के एक कक्ष में उसने गणेशजी की प्रतिमा देख आदेश देकर वह मूर्ति वहां से हटवा दी। कुछ दिनों बाद दरबार में साधु ने राजा से कहा, महाराज अपनी धोती तुरंत उतार दें, इसमें सांप है। उसने धोती उतार दी, लेकिन सांप नहीं निकला।इस पर राजा को गुस्सा आया। उसने साधु को कालकोठरी में डलवा दिया। साधु फिर से तप करने लगा। स्वप्न में लक्ष्मी जी ने उससे कहा कि मूर्ख तूने राजमहल से गणेशजी की मूर्ति हटवा दी। तूने उन्हें रुष्ट कर दिया, इसलिए उन्होंने तेरी बुद्धि हर ली है। साधु को अपनी गलती का अहसास हुआ। उसने गणपति जी से प्रार्थना कर उनको प्रसन्न किया। और फिर राजा ने कालकोठरी पहुंचकर साधु से क्षमा मांगी। उसे फिर से मंत्री बना दिया गया। साधु ने गणपति को फिर से स्थापित किया। साथ ही वहां लक्ष्मी जी की मूर्ति भी स्थापित की। इस प्रकार कहा गया है कि धन के लिए बुद्धि का होना आवश्यक है। दोनों साथ होंगी तभी मनुष्य सुख एवं समृद्धि से रह सकता है।

...इसलिए है लक्ष्मी पूजन का विशेष महत्व

एक बार भगवान विष्णु ने ऋषि दुर्वासा जी को श्री धाम बैकुण्ठ से लौटते समय कमल पुष्पों की माला दी। रास्ते में दुर्वासा जी को देवराज इन्द्र मिले तो उन्होंने वह माला इन्द्र को पहना दी। इन्द्र ने वही माला उतारकर जिस हाथी (ऐरावत) पर वह बैठे थे, उसकी गर्दन पर रख दी और हाथी ने सिर हिलाया तो वह माला जमीन पर गिरी। जब दुर्वासा ऋषि ने उस माला को हाथी के पैर से कुचलते हुए देखा तो देवताओं को श्राप दे दिया। इससे सारे देवता श्रीहीन हो गए। बाद में समुद्र मंथन किया... आश्विन कृष्ण अष्टमी को माता लक्ष्मी का प्राकट्य श्रीमद्भागवत के अनुसार समुद्र मंथन से हुआ। देवताओं ने अष्टमी से कार्तिक कृष्ण अमावस्या तक नारायण सहित लक्ष्मी का पूजन किया। इससे उन्हें फिर से 'श्री' की प्राप्ति हुई। इसीलिए आश्विन कृष्ण अष्टमी से कार्तिक कृष्ण अमावस्या तक लक्ष्मी पूजन का विशेष महत्व है।

लक्ष्मी पूजन: विधि-विधान

31 अक्टूबर 2024

गुरुवार को यह पर्व मनाया जाएगा।

प्रदोष काल: सायं 5:42 से 8:18 तक

वृष लग्न: सायं 6:35 से 8:30 तक

पूजन सामग्री: श्रीफल, इत्र, रोली, मोली, चन्दन, केसर, नैवेद्य, पंचमेवा, जनेऊ, खीर, सुपारी, लाजा (धान की खील), लौंग, पान, इलायची, बही-खाता, सिन्दूर, अबीर दवात, गुलाल, धूपबत्ती, साबुत धनिया, दीपक बत्ती सहित साबुत मूंग, रुई, साबुत हल्दी, कमल गट्टा, घी, आल (मंजीठ), कर्पूर, कपास के बीज (काकड़ा), पांच प्रकार के फल, चांदी का सिक्का। इसके अलावा आप जो भी कार्य करते हैं, उससे संबंधित वस्तु पूजा में जरूर रखें, जैसे लेखक हैं तो लेखनी (पेन)। इसी के साथ पुष्पों की माला एवं लक्ष्मी जी का चित्र, पुष्प थाली, पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, बूरा), कमल पुष्प, कलश, पीली सरसों आदि।

खास मंत्रों से करें पूजा-अर्चना

पूजनकर्ता यानी यजमान, आचार्य, स्नान व संध्या वंदन भगवद् आराधन से निवृत्त होकर शुभ मुहूर्त में पवित्र स्थान पर बैठकर आसन ग्रहण करें। स्थान को मांगलिक कर उस पर भगवती लक्ष्मी संग गणपति जी का चित्र अथवा मूर्ति विराजमान करें। पूर्वाभिमुख सुखासन पर बैठकर शरीर को गंगा जल से पवित्र करें।

अपने बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली से मुख में तीन बार आचमन करें-

ऊँ केशवाय नमः ऊँ नारायणाय नमः ऊँ माधवाय नमः ऊँ गोविन्दाय नमो नमः। हस्तौ प्रक्षाल्येत

आसन पवित्रीकरणः गंध अक्षत पुष्प दाहिने हाथ में लेकर मंत्र बोलें-

ऊँ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वंविष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

गायत्री मंत्र से प्राणायाम करें

जिस मंत्र से दीक्षित हों अथवा गायत्री मंत्र
से प्राणायाम करें।

**गंध, अक्षत व पुष्प लेकर (वरुण) जल के कलश
में भगवान वरुण का पूजन करें:**

**ऊँ अपो देवीरुपह्वये यत्र गाव: पिबन्ति न: ।
सिन्धुभ्य: कर्त्व (गुँ) हवि: ।।**

तीर्थ का जल पात्र में छोड़ें और सभी तीर्थों का ध्यान करें
हाथ जोड़कर:

**गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।
ऊँ जल बिम्बाय विद्महे नीलपुरुषाय धीमहि
तन्नो अम्बु प्रचोदयात्।।**

पूजन सामग्री का करें प्रोक्षण

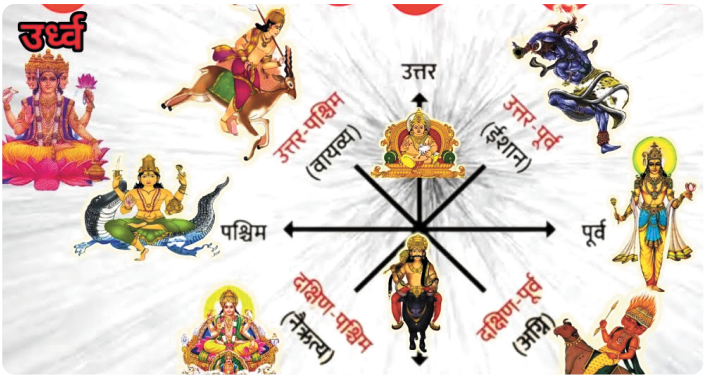

पूजित जल से पूजन सामग्री का प्रोक्षण करें, तत्पश्चात् अक्षत व पुष्प लेकर दीपक का पूजन करें:

भो दीप देव रुपस्त्वं कर्म साक्षीह्यविघ्नकृत।
यावत् कर्म समाप्ति स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

पूजन के बाद अपने हाथ जल से धोएं। दाहिने हाथ में अक्षत व पुष्प लेकर अपने इष्ट देवता का स्मरण करें।

हाथ जोड़कर महागणपति को प्रणाम करें। ब्रह्मा जी व सरस्वती जी को प्रणाम करें। भगवान नारायण व देवी लक्ष्मी को प्रणाम करें। भगवान शिव व माता पार्वती को प्रणाम करें। इन्द्र-इंद्राणी को प्रणाम करें। माता-पिता के चरणों में प्रणाम करें। अपने पूर्वजों को ध्यान में लाकर प्रणाम करें। अपने गुरुदेव भगवान को प्रणाम करें। अपने गांव के देवताओं को प्रणाम करें। धन कुबेर को प्रणाम करें। दसों दिशाओं में प्रणाम करें।

संकल्प

ऊँ विष्णु: ऊँ विष्णु: ऊँ विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्र्णोआज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्राह्मणोह्नि द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत वराह कल्पे सप्तमें वैवस्वत मन्वन्तरे अश्टाविंषति तमे कलि युगे कलि प्रथम चरणे...
काल युक्त नाम संवत्सरे संवत् एकाशिति उत्तर द्विसहत्र संख्या परिमिते नृपति वीर विक्रमादित्यराजयाद शट चत्वारिंश उत्तर एकोनविंश शाके शालिवाहन शकाब्दे सूर्य दक्षिण अयने शरद ऋतौ मासानां मासोत्तमे कार्तिक मासे शुभे कृष्ण पक्षे अमावस्यां शुभ पुण्य तिथौ (दीपमालिका महापर्वे) वारादि श्रेष्ठ.....
जो वार हो उसका नाम लें....यथा-यथा स्थान स्थितेशु सत्सु एवं ग्रहगुण विशेषेण विशिष्टायां शुभ पुण्य वेलायां...
अपने गौत्र का नाम लें, अपना नाम लें, अपनी पत्नी का नाम मन में लें। जैसे शर्माहं/गुप्तोऽहं/दासोऽहं अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्ति अर्थं, प्राप्त लक्ष्मी चिरकाले गृहे-भण्डारे-व्यापारे संरक्षण पूर्वकं गृहे स्थिर लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं, व्यापारे चल लक्ष्मी प्राप्ति अर्थम, मम गृहे अलक्ष्मी निवारण अर्थम् आयु आरोग्य ऐश्वर्य प्राप्ति अर्थंम् व्यापारे उत्तरोत्तर द्विगुणं चतु: गुणम् वृद्धि निमित्तेन दीपमालिका महापर्वे महालक्ष्मी धन कुबेर पूजनं अहं करिष्ये।

संकल्प के पश्चात् पूजन

ऊँ गं गणपतये नमः ऊँ भगवती कुलदेव्यै नमः
दिव्य पितृभ्यो नमः ऊँ सूर्याय नमः ऊँ चन्द्रमसे नमः
ऊँ भौमाय नमः ऊँ बुधाय नमः ऊँ गुरुवे नमः ऊँ शुक्राय नमः ऊँ शनैश्चराय नमः ऊँ राहवे नमः
ऊँ केतवे नमः ऊँ ब्रह्मणे नमः
ऊँ विष्णवे नमः ऊँ शिवाय नमः ऊँ लक्ष्मयै नमः
ऊँ सरस्वतयै नमः ऊँ भगवते रुद्राय नमः

इन सब देवताओं को गंध अक्षत (चावल) पुष्प से पूजकर धूप-दीप नैवेद्य (प्रसाद) फल-पान दक्षिणा क्रम से चढ़ाकर सबको प्रणाम करें।

दीपावली की मुख्य पूजा

भगवती महालक्ष्मी को प्रणाम कर उनका ध्यान करें

भगवती के चरण धुलाएं। अर्घ्य प्रदान कर जल से हाथ धुलाने का ध्यान करें। साथ ही जल से मुख में आचमन कराएं। जल से स्नान करवाकर पंचामृत से स्नान कराएं। फिर जल से स्नान कराएं। अंग प्रोक्षणम् - मूर्ति अथवा चित्र को वस्त्र से पोछें। मूर्ति हो तो वस्त्र पहनाएं और चित्र हो तो मोली लगाएं। जनेऊ पहनाएं। जल से दो बार आचमन कराएं। मोली या दुपट्टा भगवती को पहनाएं। केसर चन्दन से भगवती को तिलक करें। रोली कुमकुम(सीधे हाथ की अनामिका अंगुली से) लगाएं। भगवती को चावल चढ़ाएं। पुष्प माला चढ़ाएं। अनेक प्रकार के गुलाब, जुही, चम्पा, कमल आदि पुष्प चढ़ाएं। भगवती को इत्र लगाएं। सिन्दूर लगाएं। अपने बाएं हाथ में चंदन लगे हुए चावल व पुष्प लेकर भगवती महालक्ष्मी के एक-एक अंग का ध्यान करते हुए चढ़ाएं।

लक्ष्मी मंत्र

ऊँ चपलायै नमः पादौ पूजयामि। ऊँ चंचलायै नमः जानुनी पूजयामि। ऊँ कमलायै नमः कटिं पूजयामि।
ऊँ कात्यायन्यै नमः नाभिं पूजयामि। ऊँ जगन्मात्रै नमः जठरे पूजयामि। ऊँ विश्ववल्लभायै नमः वक्षः स्थलं पूजयामि। ऊँ कमलवासिन्यै नमः हस्तौ पूजयामि। ऊँ पद्माननायै नमः मुखं पूजयामि। ऊँ कमल पत्राक्ष्यै नमः नेत्रत्रयं पूजयामि। ऊँ श्रियै नमः शिरः पूजयामि। ऊँ महालक्ष्मयै नमः सर्वांगं पूजयामि।

मां महालक्ष्मी का 'धन' मंत्र

ऊँ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ऊँ महालक्ष्मयै नमः

महालक्ष्मी की अष्टसिद्धि आराधना

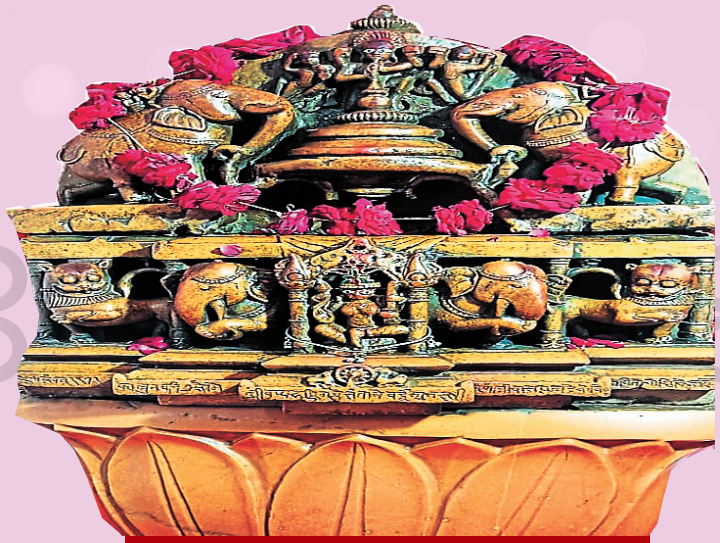

दिशावार पूजा

एक-एक नाम पर आठों दिशाओं से माता पर चन्दन चावल पुष्प चढ़ाएं।

ऊँ अणिम्ने नमः पूर्व दिशा। ऊँ महिम्ने नमः अग्नि कोण। ऊँ गरिम्ने नमः दक्षिण दिशा।

ऊँ लघिम्ने नमः नैऋत्य कोण। ऊँ प्राप्तयै नमः पश्चिम दिशा। ऊँ प्राकाम्यै नमः वायव्य कोण।

ऊँ ईशितायै नमः उत्तर दिशा। ऊँ वशितायै नमः ईशान कोण

आठों दिशाओं की आठ महालक्ष्मी को प्रणाम करें पूर्वादि क्रम से

ऊँ आद्यलक्ष्म्यै नमः ऊँ विद्यालक्ष्म्यै नमः ऊँ सौभाग्य लक्ष्म्यै नमः ऊँ अमृतलक्ष्म्यै नमः ऊँ कामलक्ष्म्यै नमः ऊँ सत्य लक्ष्म्यै नमः ऊँ भोग लक्ष्म्यै नमः ऊँ योग लक्ष्म्यै नमः

भगवती को ताम्बूल (पान) खिलाएं

धूपं आघ्रापयामि - धूपबत्ती प्रज्जवलित करें।
दीपकं दर्शयामि - भगवती को दीपक दिखाएं।

जल से हाथ धोकर जो सामग्री नैवेद्य (प्रसाद से सिद्ध की है) पंचमेवा - खीर, मावे की मिठाई का भगवती को भोग लगाएं। इसके पश्चात् जल से दो बार आचमन कराएं। फलों का भोग लगाएं और भगवती को जल से तीन बार आचमन कराएं। भगवती को ताम्बूल (पान) खिलाएं। इसके बाद चन्दन के जल से हाथ धुलाएं। भगवती को सोना, चांदी व प्रचलित मुद्रा (पैसे) में दक्षिणा अर्पण करें।

माता जी की आरती करें(आगे आरती दी गई है, जिसे क्यूआर कोड स्कैन करके सुन भी सकते हैं)।
भगवती को पुष्प-चावल लेकर पुष्पांजली अर्पण करें।
उनकी परिक्रमा का ध्यान करें।

देहली विनायक पूजनम्

व्यापारिक प्रतिष्ठान (दुकान आदि) में दीवारों पर स्वास्तिक, शुभ-लाभ मांगलिक शब्द सिन्दूर आदि से लिखकर इन्हीं शब्दों पर देहली विनायकाय नमः इस मंत्र से चावल, रोली, पुष्प से पूजन करें।

पंजिका-बही-खाता पूजनम्

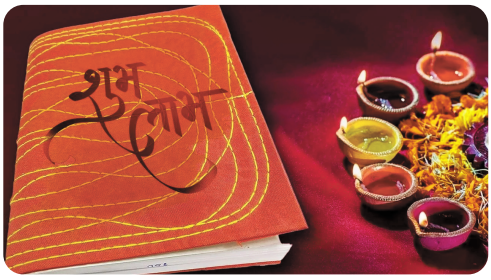

बही खाता और उसके वस्त्र पर स्वास्तिक बनाकर गंध, अक्षत व पुष्प से पूजन करें। अब साबुत हल्दी, कमलगट्टा, अक्षत (चावल), साबुत मूंग, मंजीठ (आल), दुर्वा व पैसे रखकर ऊँ वीणा पुस्तक धारिण्यै श्री सरस्वत्यै नमः मंत्र से पुनः पूजन करें।

श्रीमहाकाली द:वात तथा लेखनी पूजनम्

स्याही युक्त द:वात या कलम (पेन) महालक्ष्मी के सामने चावल पर रखें। सिन्दूर से स्वास्तिक बनाएं, मोली लगाएं। श्रीमहाकाल्यै नमः मंत्र से चावल-पुष्प-कुमकुम चढ़ाएं व प्रसाद चढ़ाएं।

कुबेर पूजनम्

तिजोरी अथवा लॉकर या पैसे रखने वाले स्थान पर स्वास्तिक बनाकर उसमें निधि पति कुबेर का पूजन ऊँ कुबेराय नमः, ऊँ धनाध्यक्षाय नमः मंत्रों से करें। प्रार्थना करें।

तुला पूजनम्

तुला पर गंध अक्षत-पुष्प से स्वास्तिक बनाकर तुलाधिश्ठातृ देवतायै नमः मन्त्र से पूजन करें। इसके पश्चात् दीपावली के दीपकों का पूजन करें। किसी पात्र में (थाली या थाल में) गयारह/ इक्कीस/ इक्यावन के क्रम में दीपक लेकर उनमें श्रद्धानुसार घी या तेल डालकर महालक्ष्मी के समीप रखें। ऊँ दीपावल्यै नमः इस मंत्र से सावधानीपूर्वक पूजन करें। इसके बाद अपने आचार्य/गुरु परम्परा के अनुसार संतरा, ईख (गन्ना), पानी, फल, धान का लावा (खील) इत्यादि पदार्थ गणेश, महालक्ष्मी तथा अन्य सभी देवी-देवताओं को अर्पण करें। इसके पश्चात सभी दीपकों को प्रज्जवलित कर घर के सभी स्थानों पर रखकर अलंकृत करें।

महालक्ष्मी जी की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता॥
ओम जय...

उमा, रमा, ब्रम्हाणी, तुम ही जग माता।
सूर्य चद्रंमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ओम जय...
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-संपत्ति दाता।
जो कोई तुमको ध्याता, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥
ओम जय...

तुम पाताल निवासनी, तुम ही शुभदाता।
कर्म प्रभाव प्रकाशनी, भव निधि की त्राता॥ ओम जय...
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता।
सब सभंव हो जाता, मन नहीं घबराता॥
ओम जय...

तुम बिन यज्ञ ना होता, वस्त्र न कोई पाता।
खान पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ओम जय...
शुभ गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥
ओम जय...

महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई नर गाता।
उर आंनद समाता, पाप उतर जाता॥ ओम जय...
ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हरि विष्णु विधाता॥
ओम जय...

आरती का ऑडियो

आरती सुनने के लिए क्यूआर कोड को स्कैन करें।

दीपक जलाते समय का मंत्र

मान्यता है कि पूजा-पाठ से जुड़े हर काम के लिए धार्मिक ग्रंथों में मंत्र बताए गए हैं। इनका उच्चारण करते हुए शुभ कार्य किया जाए तो उसका प्रभाव ज्यादा होता है। दिवाली पर दीपक जलाते वक्त इस मंत्र का जाप करें- शुभम करोति कल्याणं, आरोग्यं धन संपदाम्, शत्रु बुद्धि विनाशाय, दीप ज्योर्ति नमोस्तुते।।

मान्यता है इस मंत्र से वास्तु दोष दूर होता है।

संकल्प लें

सम्पूर्ण पूजन के पश्चात् सीधे हाथ में जल लेकर बोलें -

(अनेन यथाशक्ति अर्चनेन श्रीमहालक्ष्मी : प्रसीदतु)

दीपावली के अगले दिन हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर ग्रहादि देवताओं का विसर्जन करें। ।। शुभम् भवतु ।।

अन्नकूट महोत्सव

दीपावली के अगले दिन कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को अन्नकूट महोत्सव मनाया जाता है। इस दिन गोवर्धन पूजा की जाती है। यह त्योहार प्रकृति, मानव व पशुओं के बीच अन्योन्याश्रयता को दर्शाता है। गोवर्धन पूजा अहंकार और आत्मकेन्द्रिता पर धार्मिकता की जीत का प्रतीक है। इस दिन भगवान श्रीकृष्ण ने इंद्र के क्रोध की वजह से लगातार हो रही बारिश और बाढ़ के प्रकोप से ब्रजवासियों व पशुओं को बचाने के लिए गोवर्धन पर्वत उठा लिया था। इस दिन अन्नकूट बनाया जाता है।

ब्रज में ऐसे आए गिर्राज जी

माना जाता है कि यह गोवर्धन पर्वत हिमालय में पर्वतराज द्रोण के पुत्र हैं। जब भगवान राम सेतुबन्ध के कार्य में संलग्न थे तो हनुमानजी इनको हिमालय से यहां लेकर आए थे। जब हनुमान जी गिर्राज पर्वत को ला रहे थे तो उनके पास संदेश आया कि जहां भी हों, आप वहीं पर्वतराज को स्थापित कर दें, सेतुबन्ध का कार्य पूरा हो गया है। तब तक हनुमान जी बृज तक इनको ले आए थे और जब हनुमान जी इनको छोड़कर जाने लगे तो इन्होंने हनुमान जी से कहा, न तो मैं अपने घर का रहा और न श्रीराम के कार्य में सहयोग कर पाया। अब मेरा क्या होगा, मुझे तो रामजी से मिलना है। हनुमान ने यह संदेश भगवान राम के पास पहुंचाया। रामजी ने आशीर्वाद दिया कि अभी हमारा दर्शन ही कर पाओगे लेकिन आगे (द्वापर) में हमारे ही स्वरुप से आपकी पूजा होगी और कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को भगवान श्रीकृष्ण स्वयं एक रूप से गिर्राज जी में पूजे जा रहे हैं और एक रूप से बृजवासी बनकर खुद भी गिर्राज जी को पूज रहे हैं।

इंद्र के प्रकोप से रक्षा के लिए श्रीकृष्ण ने उठाया गोवर्धन पर्वत

एक दिन भगवान श्रीकृष्ण ने देखा कि 56 भोग बनाए जा रहे हैं। कृष्ण ने नंद बाबा से पूछा कि कौनसा उत्सव है, जिसकी इतनी भव्य तैयारियां हो रही हैं। बाबा ने कहा, यह सब इंद्र देवता को खुश करने के लिए हो रहा है, क्योंकि उन्हीं की कृपा से बारिश हो सकती है। इस पर कृष्ण ने कहा कि जिसका जो कर्म है, उसे वह करना ही होगा। ऐसा कह उन्होंने इंद्र के लिए हो रहे यज्ञ को बंद करवा कर गोवर्धन पर्वत की पूजा शुरू करवा दी। इस पर इंद्र गुस्सा हो गए और भारी बारिश शुरू करवा दी। इससे नंद गांव में त्राहि-त्राहि मचने लगी तो ब्रजवासियों ने प्रार्थना की। हे भक्तवत्सल प्रभो! हमें इन्द्र के प्रकोप से बचाओ। इस पर भगवान विचार करने लगे कि यह मेरी प्रतिज्ञा है जो मेरी शरण में आता है उसे मैं अभय दान देता हूं। कृष्ण ने कहा, बिलकुल मत घबराओ और सबको साथ लेकर गोवर्धन की तलहटी में पहुंच गए। सभी ब्रजवासियों से आंखें बंदकर नाम संकीर्तन करने को कहा। सबने कृष्ण की बात मानकर संकीर्तन शुरू कर दिया।

अगस्त्य ऋषि ने पिया वह पानी

और फिर कृष्ण ने अपने बाएं हाथ की कनिष्ठिका अंगुली पर गोवर्धन पर्वत उठाकर सभी को पुकारा। सारे ब्रजवासी पर्वत के नीचे आ गए। भगवान ने सात दिनों तक पर्वत उठाए रखा और इस बीच सभी की भूख-प्यास हर ली। इंद्र का घमंड चकनाचूर हो गया और उन्होंने श्रीकृष्ण से माफी मांगी।

तूफानी बारिश का पानी आखिर कहां जाता रहा!

त्रेता युग की बात है। एक बार पार्वती ने शिवजी से कहा, मैं ब्राह्मणों को भोज करवाना चाहती हूं। इस पर शिवजी ने कहा, ठीक है, तुम तैयारी करो मैं ब्राह्मणों को लेकर आता हूं। विविध प्रकार के व्यंजन बने। शिवजी केवल एक ब्राह्मण अगस्त्य ऋषि को लाए। पार्वती जी ने कहा- मैंने इतना सारा खाद्य पदार्थ बनवाया है और केवल एक ब्राह्मण! इस पर शिवजी ने कहा, पहले इन्हीं को भरपेट खिलाओ। अगस्त्य जी खाने लगे, मां पार्वती बनाते-बनाते थक गईं, किन्तु उनकी भूख नहीं मिटी। अब अगस्त्य जी ने कहा, भोजन से तो पेट भरा नहीं, कम से कम पानी ही पिला दो। शिवजी ने कहा, ब्राह्मण देव! इसके लिए आपको द्वापर युग की प्रतीक्षा करनी होगी। इस तरह द्वापर युग में ब्रजमंडल में सात दिनों तक मूसलाधार वर्षा होती रही और अगस्त्य जी पान करते रहे।

गोवर्धन पूजा: मनोकामनाएं पूर्ण

इस दिन गाय-बछड़े, बैल आदि की पूजा का विशेष महत्व है। विशुद्ध भारतीय देशी गाय के गोबर से प्रतिकृति बनाकर गोवर्धन पूजा करनी चाहिए।

परिवार की सुख- समृद्धि, अच्छे स्वास्थ्य व लम्बी उम्र के लिए यह पूजा की जाती है।

इस दिन 56 भोग तैयार किए जाते हैं। जिनमें प्रमुख तौर पर कड़ी चावल और बाजरा बनाया जाता है। इसके अलावा बहुत से मिष्ठान्न, नमकीन, अनेक प्रकार के फल आदि सभी के प्रकार के व्यंजन शामिल किए जाते हैं। इनमें गौ माता का दूध-घी काम में लिया जाता है। साबुत अन्न के भी पकवान बनाकर भगवान को खिलाए जाते हैं। इसलिए गोवर्धन पूजा का नाम ही (अन्नकूट) हो गया है। इस दिन अन्न (धान्य) कूट (पर्वत) अन्न के पर्वत बना- बनाकर ठाकुरजी को भोग लगाते हैं। गोवर्धन पूजन करने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

गिरिराज जी की करें 7 परिक्रमा

सबसे पहले घर के मुख्य द्वार पर या अपने मंदिर के द्वार पर गाय के गोबर से गोवर्धन पर्वत का स्वरुप बनाएं। इस पर्वत की नाभि के स्थान पर एक कटोरी जितना गड्ढा बनाएं। गिरिराज जी का ध्यान करें। उनको पहले जल से और फिर दूध से स्नान कराएं। दोबारा जल से स्नान कराएं। वस्त्र-जनेऊ, दुपट्टा (उपवस्त्र) चढ़ाएं। साथ ही चन्दन, रोली, चावल, माला, पुष्प, इत्र, गुलाल चढ़ाकर धूप व दीपक दिखाएं। अब बनाए गए गड्ढे में दूध, दही, गंगाजल, मधु और बताशे डालें। जो 56 भोग तैयार किए हैं, उनका भोग लगाएं। गंगा जल से आचमन कराएं। दक्षिणा चढ़ाएं। गिरिराज जी की आरती करें। अब गिरिराज जी की सात परिक्रमा जरूर लगाएं। परिक्रमा करते समय खील और बताशे अर्पित करें। गाय के बछड़े को भी पूजन में उपस्थित रखें।

शुभ भाई दूज

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया को भैया दूज (भाई दोज) का त्योहार मनाया जाता है। इस पर्व को शास्त्रों में यम द्वितीया के नाम से भी जाना जाता है। (पद्मपुराण के उत्तराखण्ड एवं भविष्य पुराण में भी इसका उल्लेख मिलता है।) इस दिन यमराज जी व चित्रगुप्त जी की पूजा की जाती है। रक्षाबन्धन के बाद भाई-बहन का यह दूसरा बड़ा पर्व है। इस दिन बहन, भाई की दीर्घायु की कामना करती है और भाई जीवनभर बहन की रक्षा का वचन देता है।

पौराणिक कथा

सूर्य भगवान की पत्नी का नाम संज्ञादेवी था, इनकी दो संतानें, पुत्र यमराज तथा कन्या यमुना थी। संज्ञा रानी पति सूर्य की उद्दीप्त किरणों को न सह सकने के कारण उत्तरी ध्रुव में छाया बनकर रहने लगी। उसी छाया से ताप्ती नदी तथा शनिश्चर का जन्म हुआ। इधर छाया का यम तथा यमुना से व्यवहार खराब होने लगा। इससे खिन्न होकर यम ने अपनी एक नई नगरी यमपुरी बसाई और वहां पापियों को दण्ड देने का काम करने लगे। यह सब देखकर यमुनाजी गोलोक चली आईं। इस पर यम ने दूतों को भेजकर यमुना को बहुत खोजवाया, मगर मिल न सकीं। फिर स्वयं ही गोलोक गए जहां विश्राम घाट पर यमुनाजी से भेंट हुई। भाई को देखते ही यमुना ने हर्ष विभोर हो स्वागत सत्कार के साथ भोजन करवाया। प्रसन्न हो यम ने वर मांगने को कहा। यमुना ने कहा- 'भैया! मैं चाहती हूं कि मेरे जल में स्नान करने वाले नर-नारी यमपुरी न जाएं। इस पर भाई असमंजस में पड़ गए। फिर यमुना बोली, आप चिन्ता न करें मुझे यह वरदान दें कि जो लोग आज के दिन बहन के यहां भोजन करके, इस मथुरा नगरी स्थित विश्राम घाट पर स्नान करें, वह तुम्हारे लोक न जाएं।' इसे यमराज ने स्वीकार कर लिया।

यमुना स्नान का विशेष महत्त्व

मान्यता है कि जो बहन यम द्वितीया के दिन अपने भाई को घर बुलाकर धूप-दीप, पुष्प आदि से मंगल आरती करके तिलक लगाकर यमुना स्नान करवाने ले जाती है और भोजन कराके आशीर्वाद देती है तो भाई को दीर्घायु की प्राप्ति होती है। साथ ही, उनको यमुना जी की कृपा से यमराज का दर्शन नहीं होता है।

ऐसे करें पूजन

इस दिन घर के बाहर द्वार पर पिसे चावल से चौक बनाने की परंपरा भी है। उस पर गाय के गोबर के सरकण्डे, लाल श्वेत (सफेद) वस्त्र लगाकर दूध, दही, गंध, अक्षत पुष्प तथा खील (लाखा) से विधिवत् पूजन करें। लोक रीति के अनुसार कथा सुनें। इसके बाद बहनें, भाई को तिलक लगाकर आरती उतारें। और फिर हाथ में कलावा बांधकर मिठाई खिलाएं। इसके बाद बहनें, भाई के हाथ में नारियल दें और फिर दोनों भोजन करें। इसके बाद भाई, बहनों को उपहार दें और चरण स्पर्श करके आशीर्वाद लें।

लोक रीति में इस मंत्र से पूजा की जाती है।

गंगा पूजे यमुना को यमुना पूजे यमराज को।
सुभद्रा पूजे कृष्ण को, गंगा यमुना नीर बहे।
मेरे भ्राता (भाई) आप बढ़ें, फलें-फूलें, उम्र बढ़े।

पत्रिका शुभोत्सव

खुशियों की रोशनी

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं। त्योहारों को पूर्ण मनोभाव, पारंपरिक संस्कारों और श्रद्धा के साथ मनाया जाए तो ये हमारे जीवन में खुशियों और समृद्धि की रोशनी बढ़ा देते हैं। दीपोत्सव से जुड़ी मंत्र एवं पूजन विधि आदि की जानकारियां इसी उद्देश्य की पूर्ति करती हैं और ये धार्मिक आस्था और लोक मान्यताओं पर आधारित हैं। दीपावली परिवार और सबके साथ मनाएं और सुरक्षित तरीके से मनाएं।

- पंडित श्री आशीष व्यास शास्त्री

डिसक्लेमर: यहां दी गई जानकारियां धार्मिक आस्था और लोक मान्यताओं पर आधारित हैं। इसे सामान्य जनरुचि को ध्यान में रखकर यहां प्रस्तुत किया गया है। विषयों एवं प्रसंगों को प्रदर्शित करने के लिए इस बुकलेट में प्रतिकात्मक तस्वीरें लगाई गई हैं।